आर एन आई नं. DELHIN/2016/68357 दुमाही बाल पत्रिका

चमूटे

अंक 4 वर्ष 1 अक्टूबर-नवम्बर, 2016

मुल्य ₹50

हाथी चल्लम चल्लम

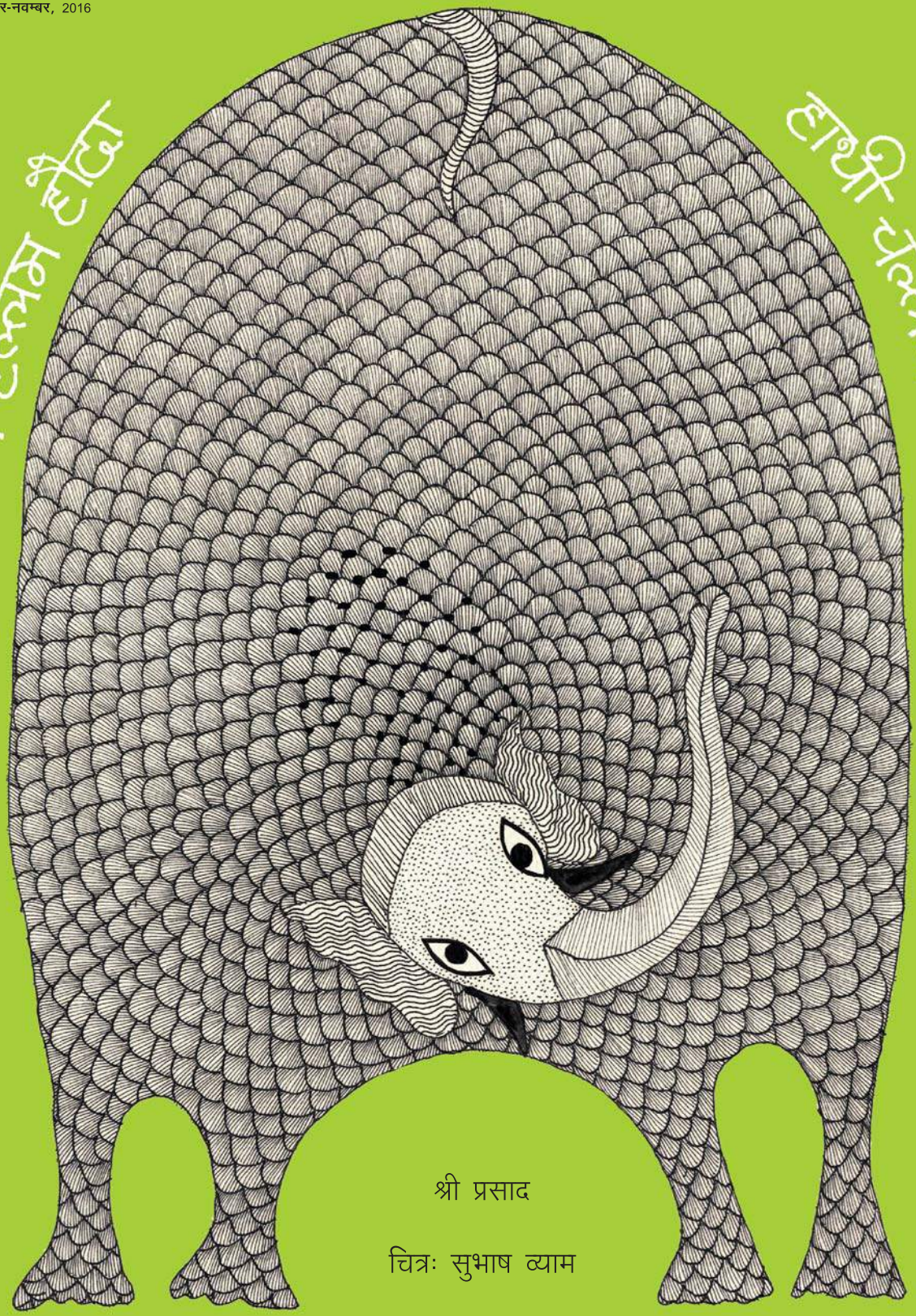

श्री प्रसाद

चित्रः सुभाष व्याम

ऊँट

बालस्वरूप राही

ऊँट बड़े तुम ऊँट-पटाँग!

गरदन लम्बी पूँछ ज़रा-सी
आँखें छोटी दाँत बड़े
ऊबड़-खाबड़ पीठ, ऊँघते
रहते अकसर खड़े-खड़े

बँधी गद्दियाँ हैं पैरों में
लेकिन झाड़ू जैसी टाँग।

चित्रः सुजाशा दासगुप्ता

अनारको के सवाल

सत्यू

अनारको चौथी में पढ़ती है। कोई न कोई सवाल उसके मन में घूमता रहता है।

आजकल वह अम्मी से पूछती है, “सब चीज़ें कौन तय करता है?”

“हमारी परीक्षा होगी ये कौन तय करता है?”

चित्रः पार्थो सेनगुप्ता

"कुछ को पास होना है और कुछ को फेल होना है ये कौन तय करता है?"
अम्मी ने कहा, "करता होगा कोई..."

अनारको ने फिर एक सवाल किया,
"अच्छा अम्मा, पापा छह दिन काम करेंगे और एक दिन छुट्टी होगी ये कौन तय करता है?"

...और अम्मी तुम सातों दिन काम करोगी ये कौन तय करता है?

अम्मी की इन सवालों में कोई दिलचस्पी नहीं थी इसलिए उन्होंने अनारको से कहा, "बढ़िया हवा चल रही है चल बाग में आम गिर रहे होंगे।"

वे दोनों एक छोटा-सा झोला उठाकर आम जुटाने चल दिए।

कलटैखैं मै

प्रभात

ओ रे चींटा
मुझे हाथी ने पीटा

काहे से
कान से

तू वहाँ गया क्यों था
खेलने
तुझे खेलने भेजा था कि
हाथी को ठेलने

चल अब हाथ मुँह धो ले
खाना खा ले
हाथी को कल देखेंगे
इधर ही बुला लेंगे

चित्रः वन्दना बिष्ट

गिलहरी

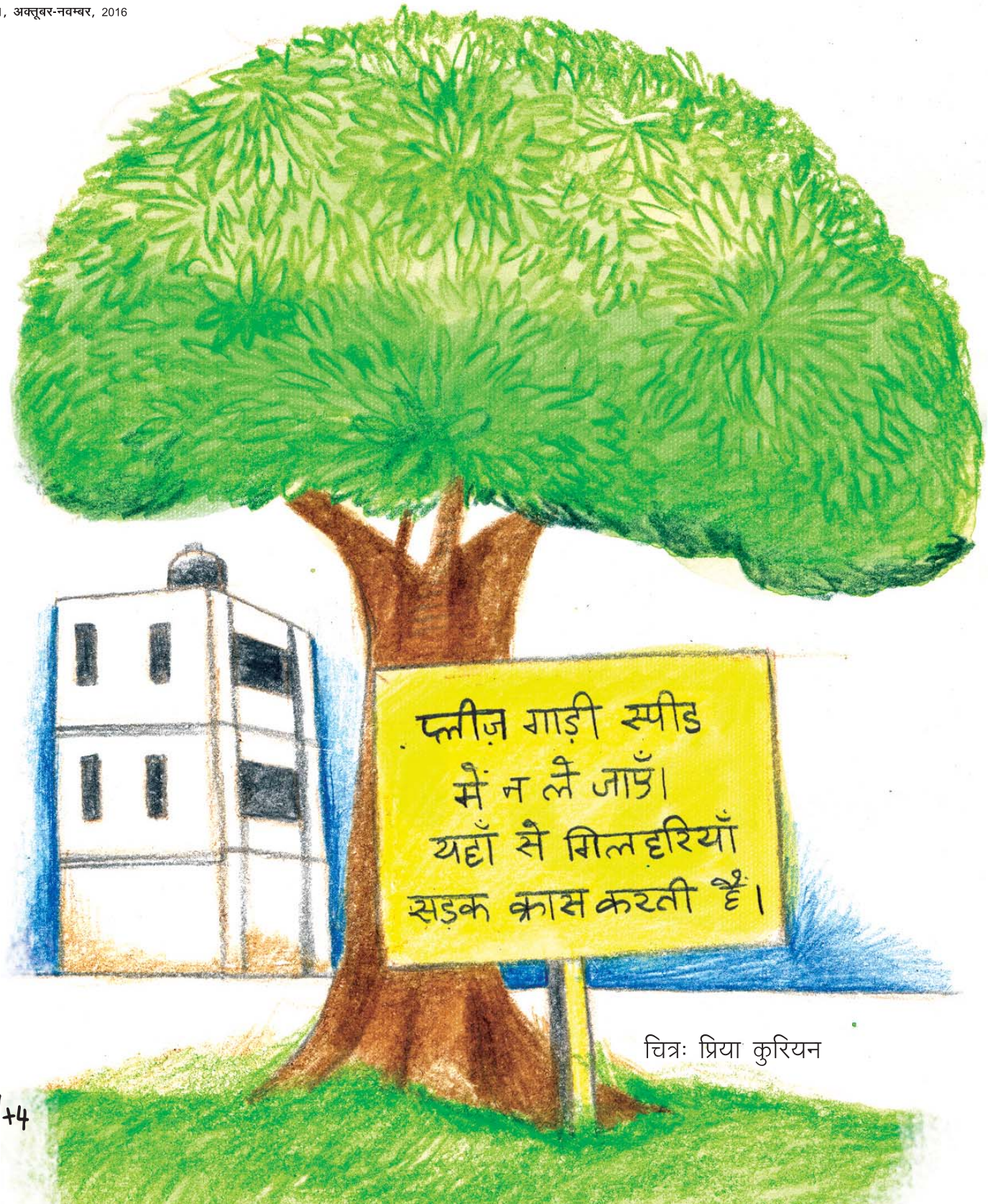

चित्रः प्रिया कुरियन

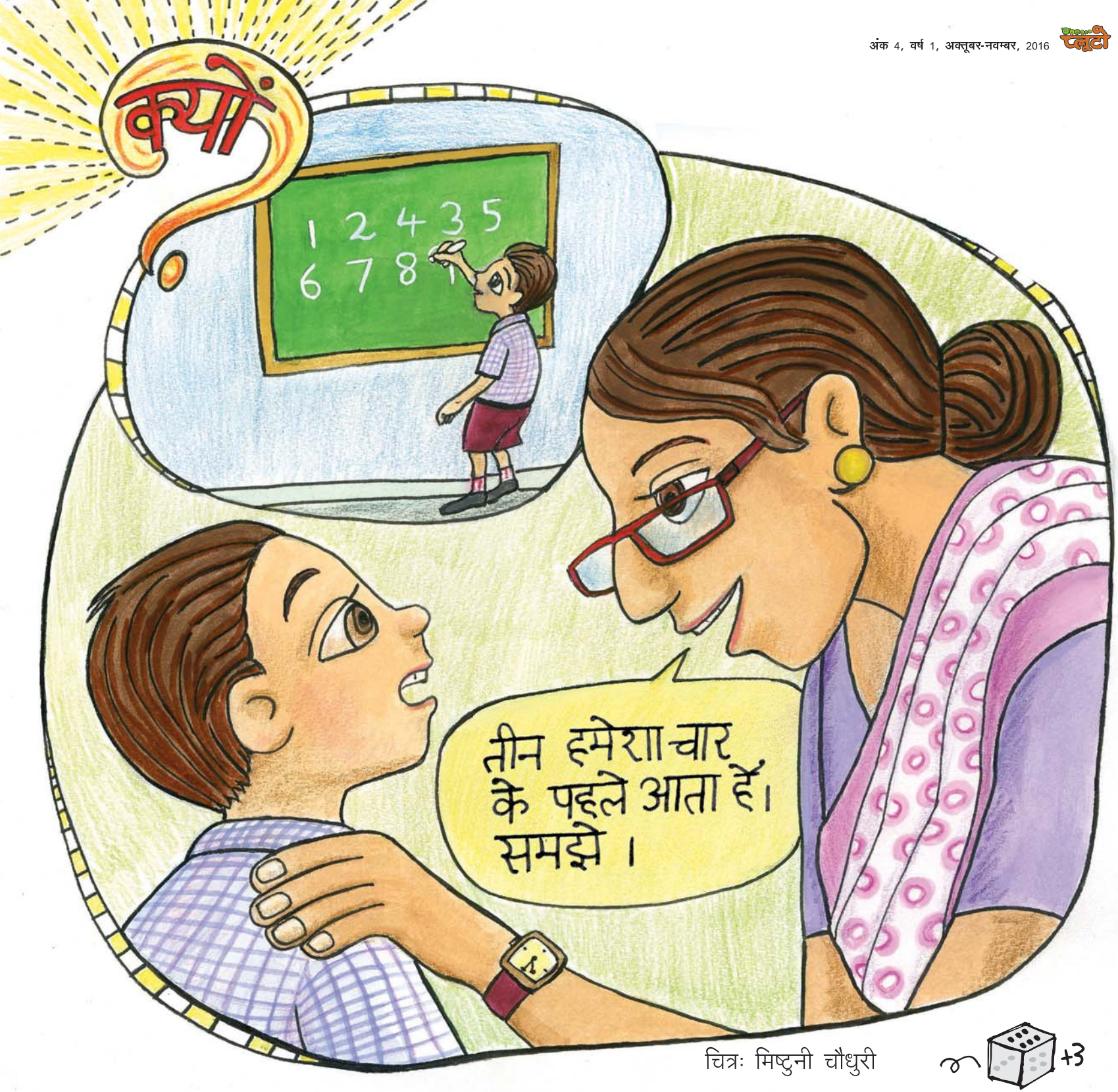

चित्रः मिष्टुनी चौधुरी

डियर मैम

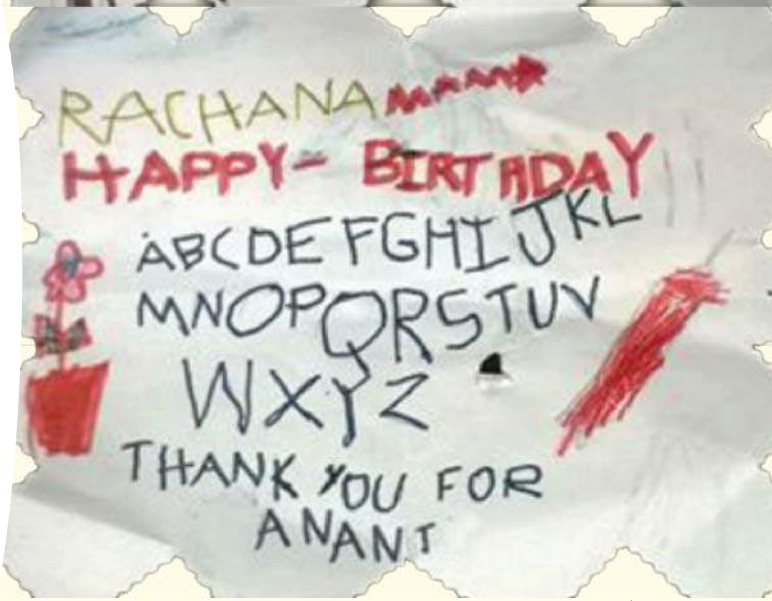

अनन्त खम्बाते
इन्दौर, मध्यप्रदेश

तुम्हारा पन्ना

डियर मैम मैं कल स्कूल नई आऊँगी
नई आऊँगी नई आऊँगी नई आऊँगी
नई नई नई आऊँगी नई ही आऊँगी
नई एक दम नई पका ही नई
आऊँगी ही नई नई नई नई नई नई
नई स्कूल नई आऊँगी नई नई नई नई
मैम नई आऊँगी खुशी 2

तुम्हारा पन्ना

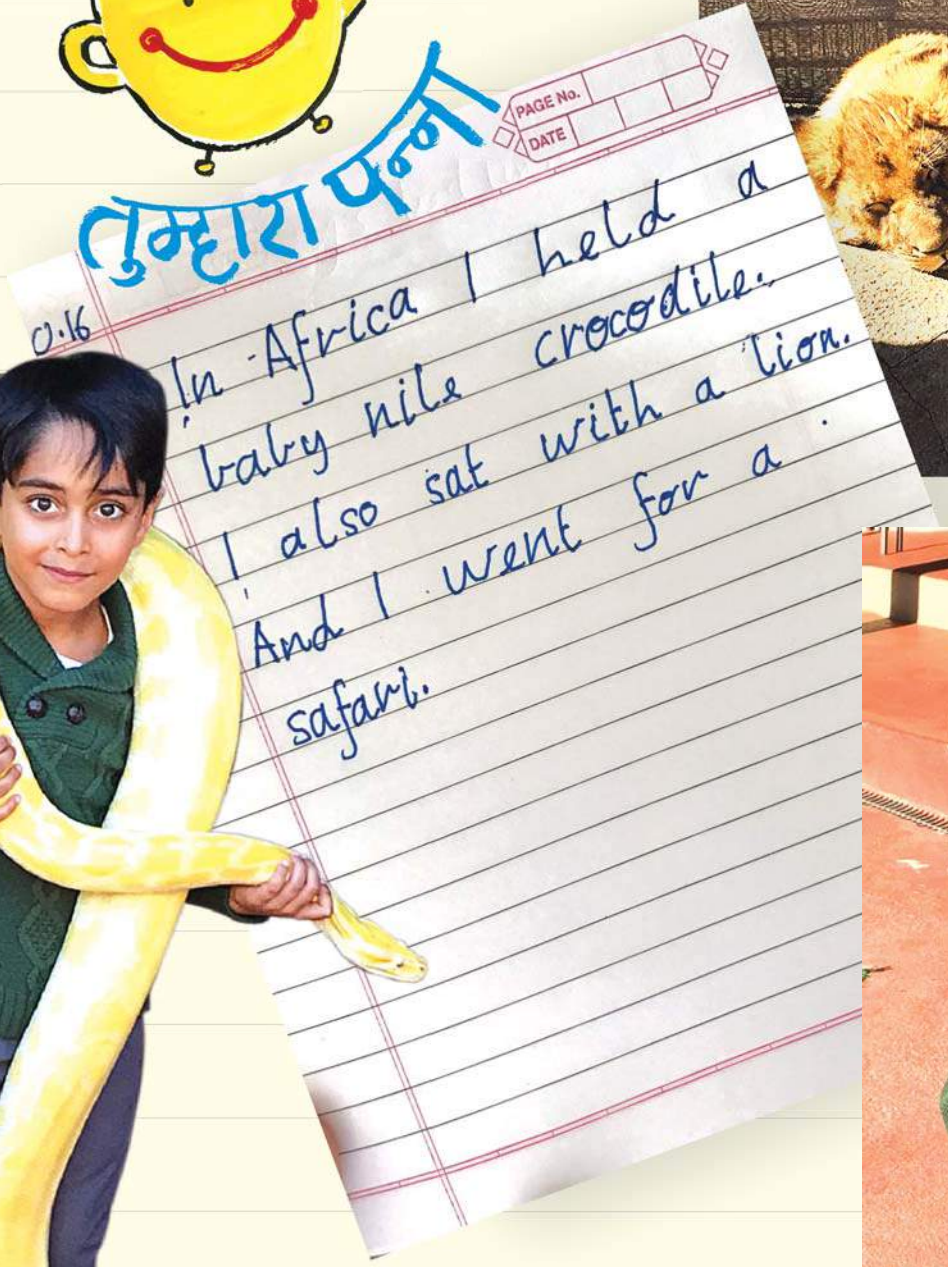
PAGE No.
DATE
0.16
In Africa I held a baby nile crocodile.
I also sat with a lion.
And I went for a safari.

समय

नोंक-झोंक

श्याम सुशील

दीदी! मुझे गुस्सा मत दिला
क्या कर लेगा?

मैं तुझे चुहिया बना दूँगा
मैं तेरी किताबें कुतर डालूँगी

मैं तुझे मधुमक्खी बना दूँगा
मैं तेरे गाल को गोलगप्पा बना दूँगी

मैं तुझे आसमान में फेंक दूँगा
मैं आसमान से तेरे ऊपर ही गिरूँगी

मैं घर में घुस जाऊँगा
डरपोक कहीं का....

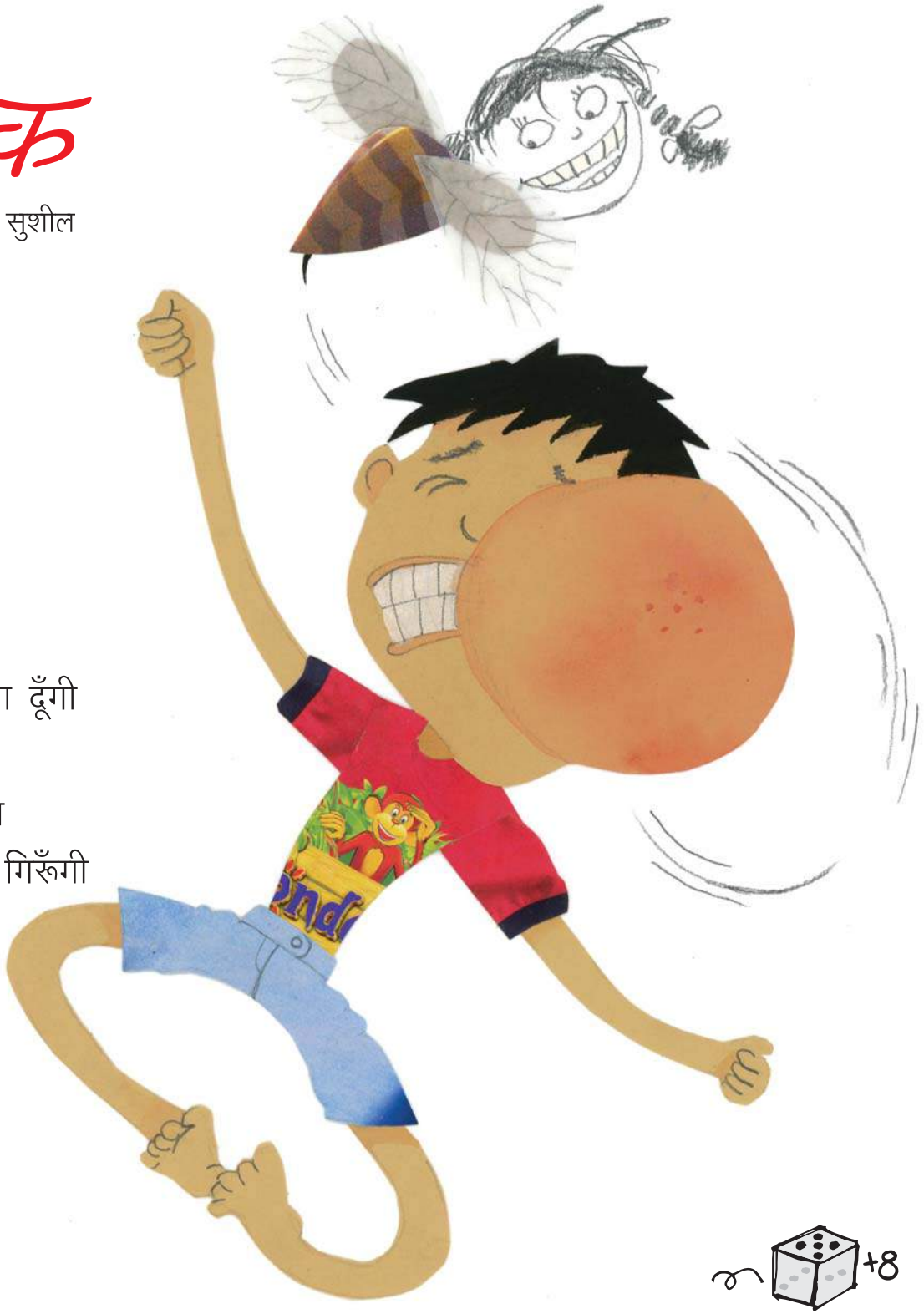

तेंदुआ

एक कछुआ सैर करने को निकला था।
तभी एक तेंदुए ने उसे पकड़ लिया।
कछुओं का खोल बहुत मज़बूत होता है।
तेंदुए ने कछुए पर कई वार किए।
पर वह उस कछुए का कुछ नहीं बिगाड़ पाया।

कछुआ बहुत डर गया था।
उसकी एक दोस्त लोमड़ी तभी वहाँ पहुँची।
लोमड़ी ने तेंदुए को नमस्कार किया।
तेंदुए से लोमड़ी बोली, "तेंदुए जी, कछुए बहुत सख्त होते हैं। मेरे पास एक तरकीब है। आप इसे पास वाले तालाब में डाल दें। थोड़ी देर में यह नरम हो जाएगा। तब आप इसे मज़े से खा लीजिएगा।"

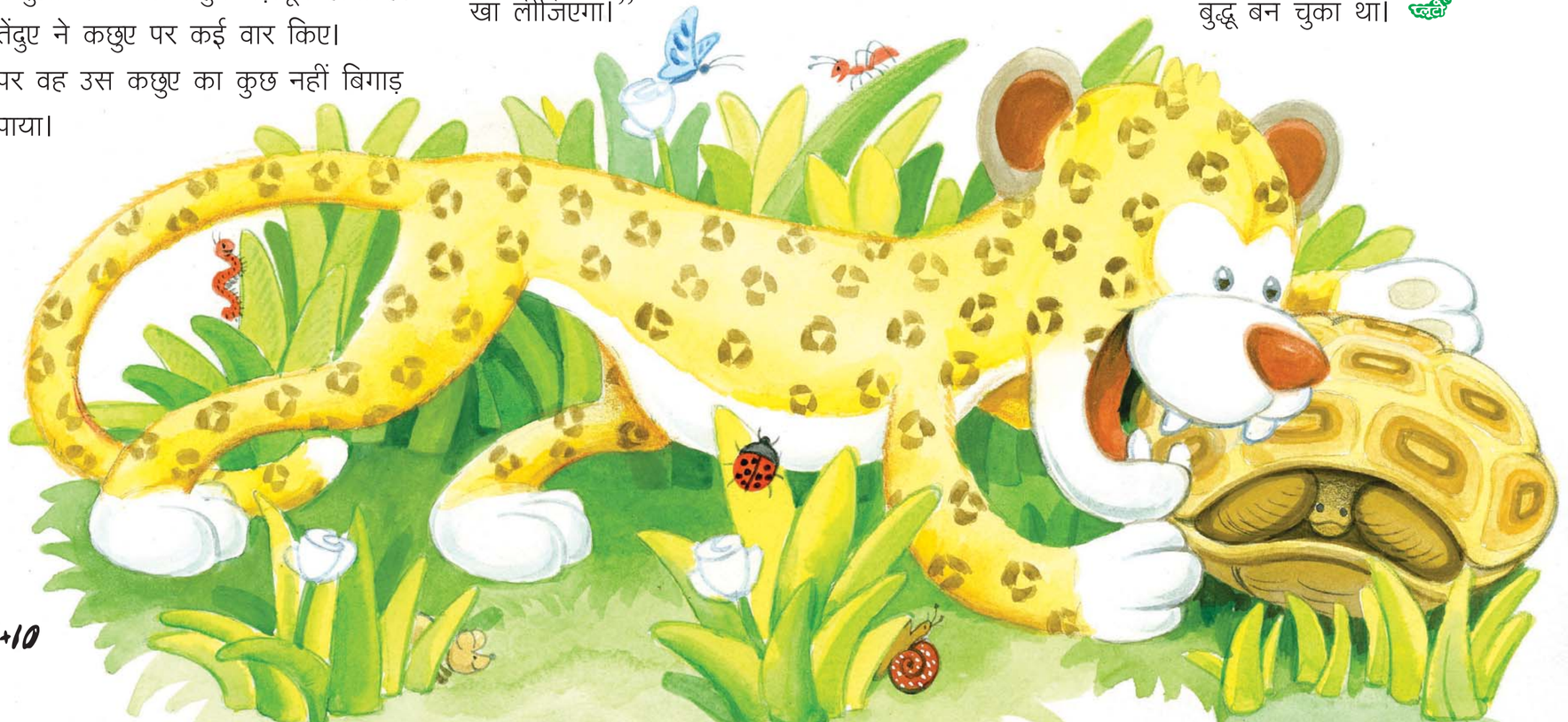

तेंदुआ खुश हो गया।
उसने कछुए को तालाब में छोड़ दिया।
तालाब में जाते ही कछुआ पानी में गायब हो गया।
और लोमड़ी वहाँ से पहले ही भाग चुकी थी।
और तेंदुआ ... वह बेचारा तो पहले ही बुद्धू बन चुका था।

चित्रः पार्थो सेनगुप्ता

चित्रः अजंता गुहाठाकुरता

मुझे ज़रा-सी चोट लगी... तुम तो रोने ही लगे...

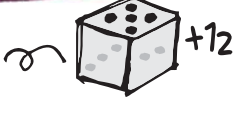

+12

जादू

बालस्वरूप राही

कौन नारियल के पेड़ों पर
जादू-सा कर जाता है
बन्द कटोरी में मीठा जल
चुपके-से भर जाता है

चित्रः मिष्टुनी चौधुरी

पहेली

ऊपर जाती है
नीचे जाती है
हिलती है न डुलती है
और न कुछ खाती है

उत्तर पेज 22 पर देखो

अमरूद मीठे हैं

एक मालिक था। वह नौकर से ठीक से पेश नहीं आता था।

नौकर को जब मौका मिलता वह मालिक को मूर्ख बना देता था। एक बार मालिक ने कहा, "जाओ, बाज़ार से अमरूद लेकर आओ। भाव कम से कम होना चाहिए। और सुनो, हरेक अमरूद मीठा होना चाहिए।"

नौकर बाज़ार गया। दूकान पर जाकर उसने खूब अच्छी तरह भाव-ताव किया।

उसने एक अमरूद चखा। अमरूद बहुत मीठा था।

चित्रः मिष्टुनी चौधुरी

उसने दो किलो अमरूद खरीदे।

वह रास्ते में एक पेड़ की छाँव में बैठ गया। फिर वह एक अमरूद निकालता उसे चखता और वापिस झोले में रख देता।

सभी अमरूदों को चखने के बाद वह मालिक के पास पहुँचा।

मालिक अमरूदों को देखकर झल्ला गया, "ये क्या किया तुमने?"
सारे अमरूद जूठे कर डाले!
नौकर ने बड़ी ही मासूमियत से कहा, "मालिक, हरेक अमरूद मीठा हो यह जानने के लिए और कोई रास्ता नहीं था।" प्लूटो

तू-तू, मैं-मैं

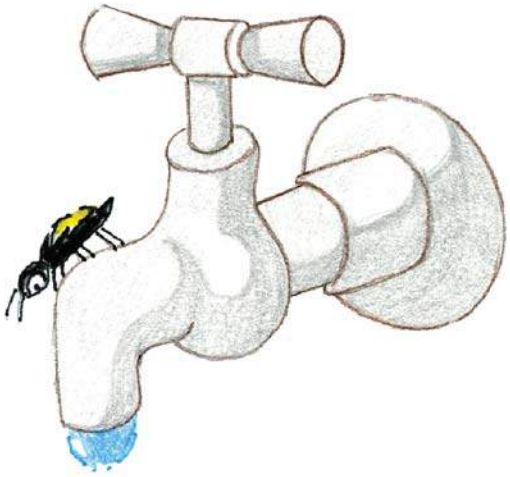

नम्रता .....

(जब वो पाँच साल की थीं।)

जब मग भरता है
तो बूँदें कहती हैं
पहले मैं पहले मैं

और बूँदों की इसी
तू-तू, मैं-मैं से

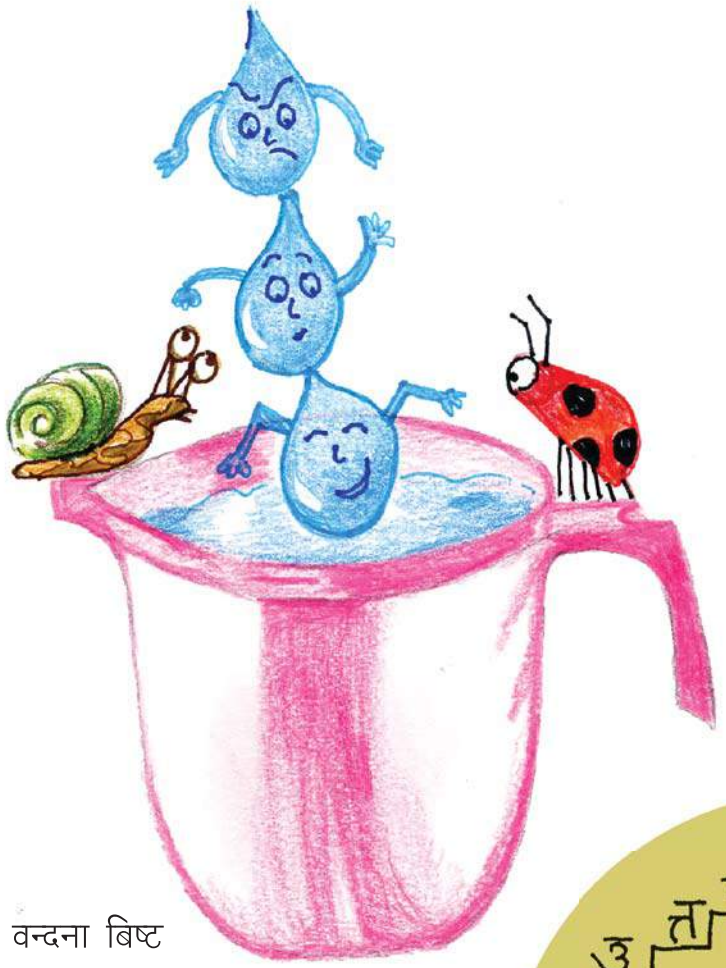

चित्रः वन्दना बिष्ट

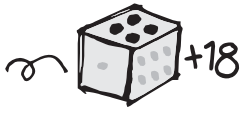

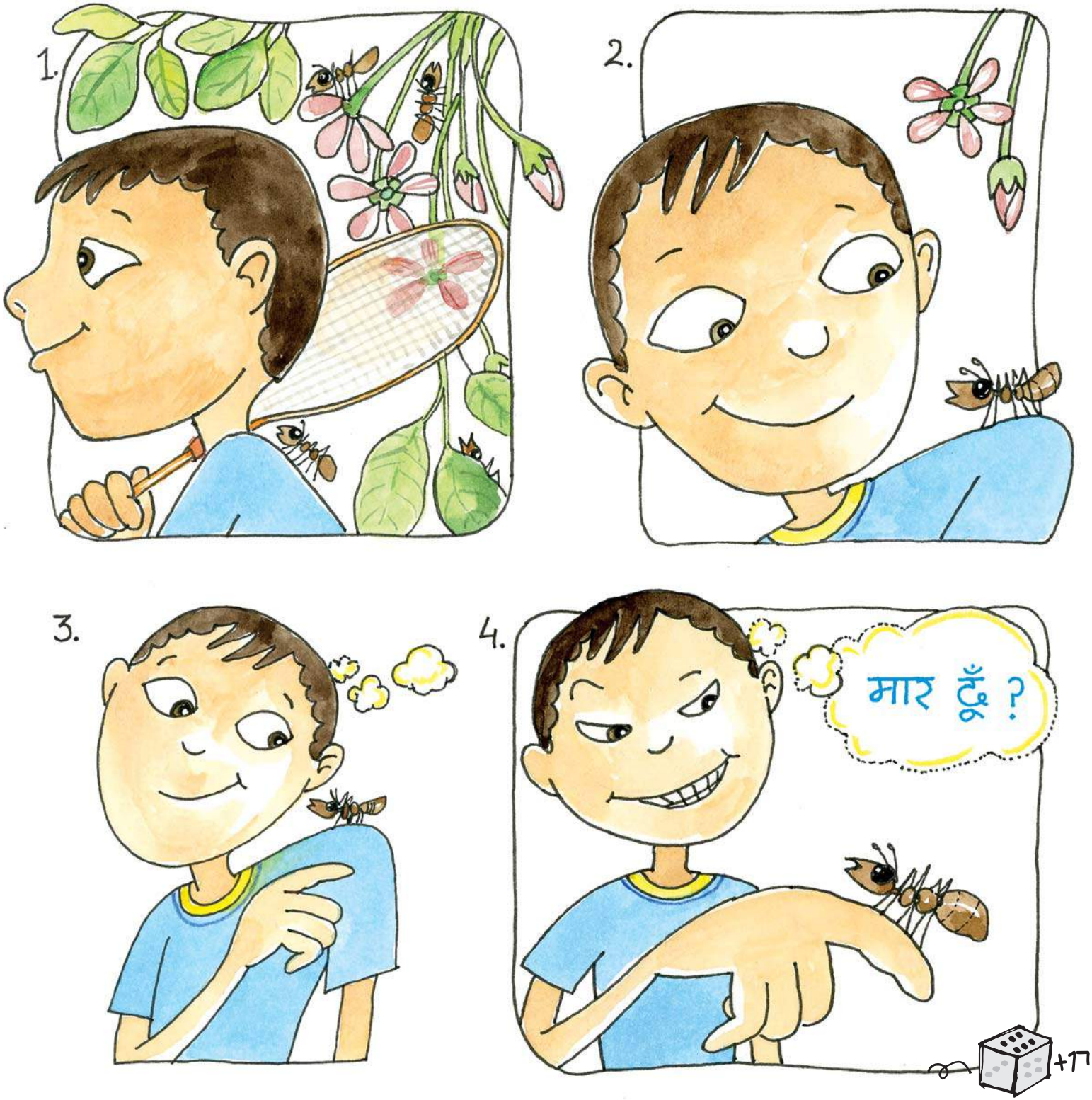
1.
2.
3.
4.
मार दूँ ?
+17

5.
1. मारूँगा तो तकलीफ होगी ।
2. जब मर ही जाएगा तो क्या तकलीफ होगी !
3. ... पर मरने से ठीक पहले तो होगी !

6.
पर इसने मेरा क्या बिगाड़ा है ।
... पर बिगाड़ सकता है ।
... जब बिगाड़ेगा तो देखेंगे ।
तब तक बहुत देर हो चुकी होगी ।

7.

... मारूँगा तो मर जाएगा। फिर इधर उधर नहीं घूम सकेगा।
... पर मर जाएगा तो भगवान जी के पास जाएगा। वहाँ... मज़े करेगा।

8.

क्या करूँ?

सत्यू

तीन तिगाड़े

वरुण ग्रोवर

माचिस गिल्ली
सूखी तिल्ली
बरसा शिमला
बह गई दिल्ली

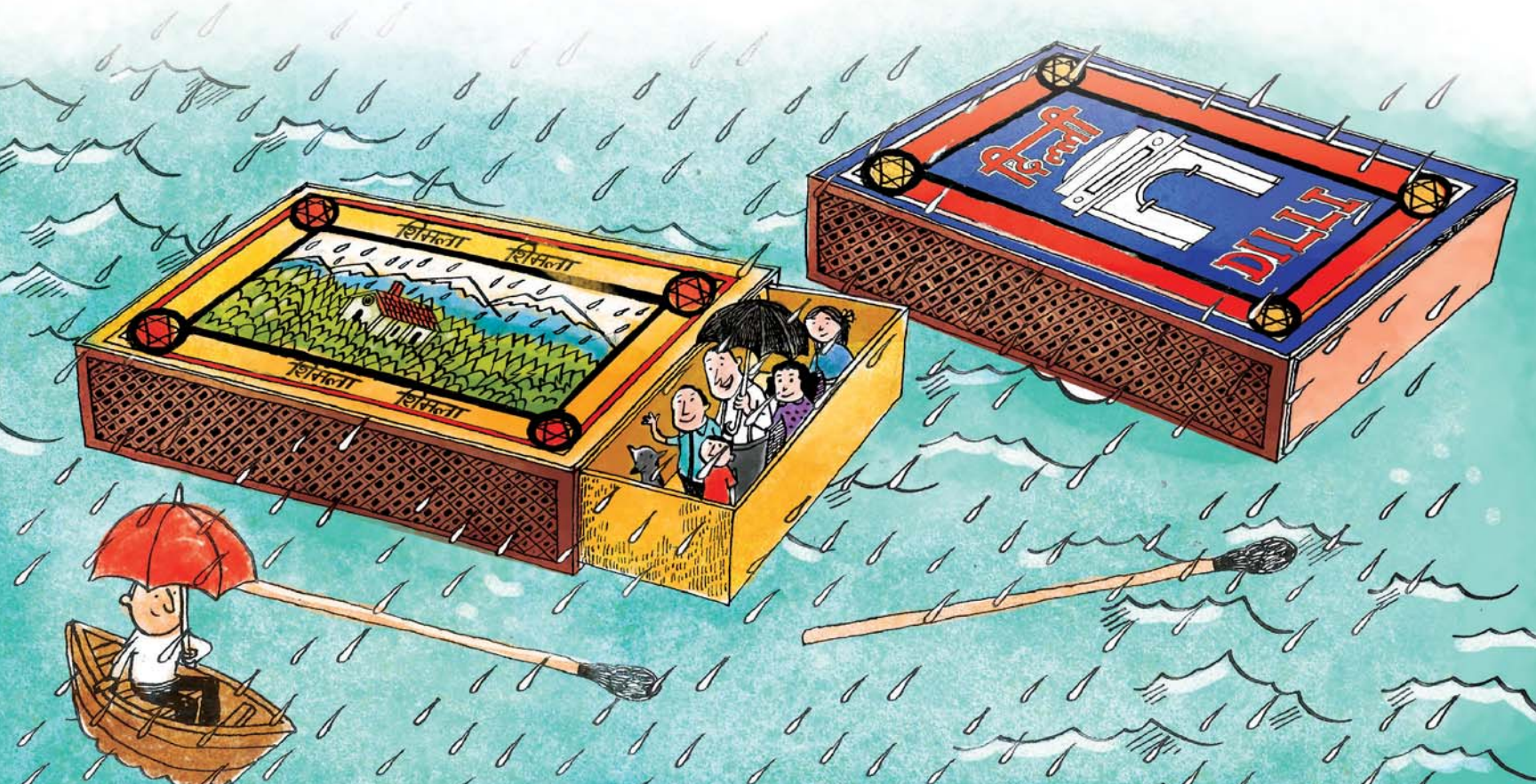

कूद कुदाई
चिरी उराई
चैन्नई से
लेकर मदुराई

चित्रः प्रिया कुरियन

चोरी चोरी
चटनी चटना
खट्टी राँची
मीठा पटना

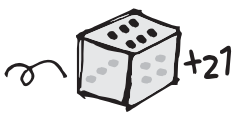

मिल्ली चिल्ली

चिल्ली ने कहा, "हमारे यहाँ तो इतनी सर्दी होती है कि हम खाना नहीं खा पाते हैं।"

"क्यों? मिल्ली ने कहा।"
"क्योंकि सर्दी से चम्मच मेज़ पर जम जाते हैं।"

"और तो और...हम लोग तो आपस में बात तक नहीं कर पाते हैं। क्योंकि हमारी बातें तक जम जाती हैं। दीवार पर शब्द जम जाते हैं।"

मिल्ली भी कम नहीं थी।

उसने कहा, "तुम्हारे यहाँ गर्मियों में बहुत शोर होता होगा।"
"क्यों?" चिल्ली ने कहा।

"क्योंकि...तब इतने महीनों के जमे शब्द पिघल जाते होंगे।"

चिल्ली बेचारा खिसियाकर रह गया।

चित्रः प्रशान्त सोनी

किस्से बादल के
पतंग से सुनते हैं
हम सपने बुनते हैं
तो तारे सुनते हैं

चटनियाँ

तारे यार, तुम भी कमाल हो!
जैसे-जैसे अँधेरा बढ़ता है तुम और साफ-साफ
नज़र आने लगते हो।

प्लूटो

विचार एवं आकल्पनः सुशील शुक्ल
डिज़ाइन एवं चित्रः तापोशी घोषाल

आवरण चित्रः तापोशी घोषाल

मुद्रक तथा प्रकाशक संजीव कुमार द्वारा
तक्षशिला पब्लिकेशन-तक्षशिला एजुकेशनल सोसाइटी
की इकाई के लिए
मल्टी कलर प्रेस, शेड नं. 92 डी.एस.आई.डी.सी.,
ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज़ 1, नई दिल्ली 110020
से मुद्रित एवं सी-404, बेसमेंट, डिफेंस कॉलोनी,
नई दिल्ली 110024 से प्रकाशित, **सम्पादकः रीमा सिंह**

प्लूटो का पताः
नॉलेज सेण्टर
सी-404, बेसमेण्ट, डिफेंस कॉलोनी,
नई दिल्ली 110024
फोनः 011- 41555 418/428
ई-मेलः pluto@takshila.net

+23

आर एन आई नं. DELHIN/2016/68357 दुमाही बाल पत्रिका

चित्रः कनक